# थारू जनजाति

## शैक्षिक समस्यायें

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

# थारू जनजाति

## शैक्षिक समस्यायें

**डॉ. राकेश कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी.एड.)
राठ महाविद्यालय पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल),
उत्तराखण्ड

**अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस**
**दिल्ली (भारत)**

नमूना • SAMPLE

*द्वारा प्रकाशित*

**अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस**

*Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore*

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

# थारू जनजाति

शैक्षिक समस्यायें

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-85-7

---

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

---

**भारत में प्रकाशित**

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी. एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

# समर्पण



**प्रोफेसर शान्ति कुमार लखेड़ा**

शिक्षा संकाय

विडला परिसर

हे.न.ब. गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय

श्रीनगर (पौड़ी गढ़वाल) उत्तराखंड

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् व मेरे प्रेरणा स्रोत, परम श्रद्धेय गुरुदेव को
यह श्रद्धा सुमन सादर समर्पित।

नमूना SAMPLE

SAMPLE

# अनुक्रम


*भूमिका* *ix*

*आभार* *xi*

1 प्रस्तावना 1

1.1 प्रस्तावना : 1
1.2 अध्ययन की पृष्ठभूमि : 50
1.3 समस्या कथन : 52
1.4 प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण : 52
1.5 अध्ययन के उद्देश्य : 52
1.6 परिकल्पनाएँ : 53
1.7 अध्ययन का सीमांकन : 55

2. पूर्व में थारू जनजाति पर किये गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण 59

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ : 59
2.2 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य : 60
2.3 सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता : 60
2.4 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व : 61
2.5 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का एक सिंहावलोकन : 63
2.6 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययनों की समीक्षा : 77


नमूना SAMPLE

3. शोध प्रक्रिया 83

3.1 विधि एवं प्रकृति : 83
3.2 जनसंख्या : 84
3.3 न्यादर्श एवं न्यादर्शन तकनीकी : 84
3.4 चर 89
3.5 प्रयुक्त उपकरण : 90
3.6 सांख्यिकीय तकनीकियाँ : 94

4. शोध हेतु प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण 95

4.1 थारू जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएं : 95
4.2 परिकल्पना परीक्षण : 133
4.3 परिकल्पना परीक्षण द्वारा प्राप्त परिणामों की विवेचना : 151

5. निष्कर्ष एवं उपयोगिता 159

5.1 अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष : 159
5.2 अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता : 169

*संदर्भ ग्रंथ सूची* 175

नमूना • SAMPLE

# भूमिका

भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव ही अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। राष्ट्र के सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर मिल सकें, राष्ट्र के समस्त नागरिकों का सर्वांगीण विकास हो सके तथा कर्त्तव्यनिष्ठ एवं अधिकार–सचेत नागरिक प्राप्त हो सकें। इसके लिए शिक्षा ही सर्वाधिक योगदान कर सकती है।

वर्षों से जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग शिक्षा से वंचित और समाज से उपेक्षित रहा है। यह वर्ग उन विशिष्ट बालकों का है जो विभिन्न जनजातियों से सम्बन्धित होने के कारण समाज में सामान्य जनजाति हेतु उपलब्ध सुविधाओं से वंचित हैं। इनके प्रति प्रायः लोगों का दृष्टिकोण रहता है कि इन्हे शिक्षित नही किया जा सकता अथवा इन्हें शिक्षित करना व्यर्थ है क्योकि यह एक ऐसा वर्ग है जिनकी उपादेयता समाज के लिए नही है परन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। समाज के प्रत्येक वर्ग का विकास देश के विकास हेतु समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। जनजातियों में भी ऐसी सम्भावनाएं छिपी रहती हैं जिनका यदि समुचित विकास किया जाए तो वे व्यक्ति भी सामान्य व्यक्तियों के साथ समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में सकारात्मक योगदान कर सकते हैं।

NCTE SAMPLE

यह एक स्वीकृत तथ्य है कि जब तक जनजातीय लोग अशिक्षित रहेंगे, तब तक जनजातियों के समग्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए किए गए केंद्र तथा राज्यों के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो जाएँगे। जनजातीय लोगों की शिक्षा के प्रति जागरुकता, उनकी साक्षरता का प्रतिशत, गैर–जनजातीय लोगों द्वारा शोषण का सामना करने की उनकी क्षमता, अपने अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति उनकी सजगता पर निर्भर करती है।

सरकार द्वारा जनजातियों के विकास हेतु संचालित की जाने वाली विभिन्न योजनाओं के उपरान्त भी जनजातियों का अपेक्षित विकास न कर पाना दर्शाता है कि जनजातीय शिक्षा के मार्ग में कुछ ऐसी बाधायें हैं जो उन्हें शिक्षित तथा विकसित होने से रोक रही हैं।

बच्चे यह भी जान सकेंगे कि अध्यापक विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं के बारे में किस प्रकार सोंचते हैं तथा उन्हें दूर करने के लिए क्या–क्या प्रयास करते हैं। जिससे बच्चे यह जान सकेंगे कि उनकी समस्याएं व्यक्तिगत नहीं हैं बल्कि पूरा समाज उनके प्रति चिंतित है तथा उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए अध्यापक विशेष रूप से प्रयासरत हैं।

अभिभावकों को पता चल सकेगा कि उनके द्वारा की गयी छोटी सी लापरवाही उनके बच्चे को किस प्रकार शैक्षिक पिछड़ेपन का शिकार बना सकती है। अतः अभिभावक उन कारणों की पहचान कर सकेंगे तथा स्वयं उन्हें दूर करने का प्रयास करेंगे ताकि उनके बच्चे उनकी छोटी–छोटी लापरवाही के कारण समस्याओं से ग्रस्त होकर शैक्षिक रूप से न पिछड़ जायें।

यह पुस्तक विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक नीतियों को बनाने वालों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अतः मुझे यह विश्वास है कि यह पुस्तक शोधार्थी छात्रों एवं शिक्षकों हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण होगी ।

**डॉ. राकेश कुमार**

SAMPLE

# आभार

गुरु इस संसार में ब्रह्मा, विष्णु, महेश का प्रतिरूप हैं। गुरु ही इस संसार में एक ऐसा दीपक है जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश से समस्त जगत अलौकिक होता है। गुरु ही अपने दिव्य ज्ञान से इस धरा पर ज्ञान रूपी वृक्ष से समस्त संसार को ज्ञान रूपी जीवन प्रदान करता है। मैं स्वयं को अत्यधिक भाग्यशाली मानता हूँ कि ईश्वर ने अपने आर्शीवाद के रूप में मुझे ऐसे गुरुओं का सानिध्य दिया।

प्रस्तुत पुस्तक को पूर्ण कराने हेतु सर्वप्रथम मैं अपने निर्देशक सदा स्मरणीय एवं परम श्रद्धेय गुरु डॉ. एस. के. लखेड़ा के प्रति हृदय से असीम आभार प्रकट करता हूँ। जिनके परम स्नेह, कुशल निर्देशन एवं उचित मार्गदर्शन से यह पुस्तक कार्य पूर्ण हो सका।

मैं शिक्षा संकाय, बिड़ला परिसर, श्रीनगर, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष प्रो. शशि किरन पाण्डेय, प्रो. प्रदीप कुमार जोशी, प्रो. रमा मैखुरी, प्रो. सुनीता गोदियाल, एसो. प्रो. गीता खण्डूरी, एसो. प्रो. आर.डी. सिंह, एसो. प्रो. अनिल कुमार नौटियाल, एसो. प्रो. सीमा धवन, असिसटेन्ट प्रो. देवेन्द्र सिंह, असिसटेन्ट प्रो. रमेश चन्द्र राणा द्वारा मुझे प्रदान किए गए सहयोग एवं निर्देशन हेतु उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

नमूना SAMPLE

मैं स्वामी शुकदेवानन्द स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) के शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रभात शुक्ल एवं डॉ. मीना शर्मा का भी आभारी हूँ जिन्होंने एम.एड. के दौरान मुझे शोध कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया।

इसके अतिरिक्त मैं हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री पवन सिंह बिष्ठ का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय–समय पर पुस्तकालय से पुस्तकें एवं आवश्यक सामग्री को उपलब्ध कराया। तथा मैं उन सभी लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से यह शोध कार्य पूर्ण करने में मुझे सहयोग प्रदान किया।

मुझे सफलता की ओर ले जाने वाले अपने परम्पूज्य पिताजी **स्वर्गीय श्री हीरा लाल** एवं माताजी **श्रीमती गेंदा देवी** के प्रति में श्रद्धान्वत हूँ जिनके सहयोग के बिना केवल यह शोध कार्य ही नहीं अपितु जीवन का प्रत्येक कार्य स्वप्न मात्र रह जाता।

साथ ही मेरे बड़े भाई श्री राम गोपाल गंगवार, श्री राम किशोर (सेवानिवृत कैप्टन), श्री नत्थू लाल गंगवार, स्व. श्री महेन्द्र पाल गंगवार एवं दाता राम गंगवार का पूर्ण सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। एवं मेरे अनुज भाई चन्द्र प्रकाश गंगवार का भी मुझे स्नेह मिला।

अन्त में मैं उस अलौकिक परम् शक्ति, परम्–पिता परमेश्वर (शिव) एवं हंस वाहिनी माँ सरस्वती देवी को भी नमन करता हूँ जिनकी कृपा दृष्टि सदैव ही लेखक के ऊपर रही है।

**डॉ. राकेश कुमार**

SAMPLE